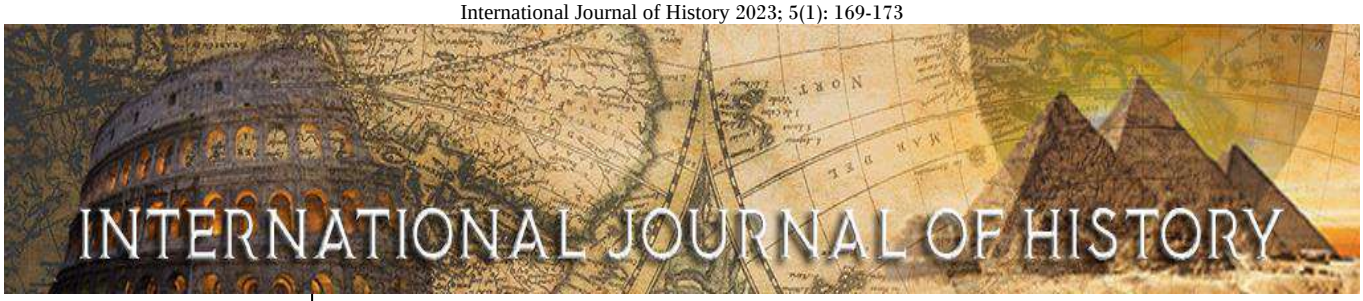

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2023; 5(1): 169-173
Received: 06-03-2023
Accepted: 12-04-2023

सुरेश कुमार
सीनियर रिसर्च फेलो एवं शोधार्थी, इतिहास विभाग, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर, भारत

डॉ. सुमन राठौड
सह–आचार्य, इतिहास विभाग, राजकीय कन्या महाविद्यालय, खेरवाडा, उदयपुर, भारत

Corresponding Author:
सुरेश कुमार
सीनियर रिसर्च फेलो एवं शोधार्थी, इतिहास विभाग, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर, भारत

जीरावला पार्श्वनाथ जैन मंदिर (ऐतिहासिकता के विशेष संदर्भ में)

सुरेश कुमार, डॉ. सुमन राठौड

DOI: https://doi.org/10.22271/27069109.2023.v5.i1c.208

सारांश
इस प्रस्तुत शोध–पत्र में सिरोही जिले का प्रसिद्ध युगयुगीन जीरावला पार्श्वनाथ जैन मंदिर तीर्थ का ऐतिहासिक एवं धार्मिक परिपेक्ष्य में विस्तारपूर्वक अध्ययन किया गया है। मंदिर का अतीत काल से अब तक की विशेषताएं, क्षेत्रीय परम्परा के साथ धार्मिकता को लिए हुए संस्कृति किस प्रकार रही है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण में मंदिर सीमित परिधि में न होकर तीर्थ की श्रेणी में विशेष आयाम रखते है, जिसमें धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक आयाम दृष्टिगोचर होता है। युग–युगों से लोक संस्कृतियां एवं परम्पराओं को मिलाकर यह मंदिर आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्व को बढावा देती है। जीरावला पार्श्वनाथ जैन मंदिर एवं तीर्थ के मूलनायक के साथ–साथ 108 विभिन्न पार्श्वनाथ प्रतिमाओं एवं अन्य प्रतिमाओं, विभिन्न अभिलेखों, विभिन्न भवनों, जीर्णोद्धारों, प्राण–प्रतिष्ठाओं एवं क्षेत्र का विस्तृत वर्णन है। इस मंदिर–तीर्थ का इतिहास के अतीत के झरोखों से वास्तु–संस्कृति के महत्व का भी विस्तृत अध्ययन किया है।

मुख्य शब्दः पार्श्वनाथ, जीरावला, जैन, युगयुगीन, सिरोही–जिला, तीर्थ–मंदिर, ऐतिहासिकता, धार्मिक संस्कृति

भूमिका
भव्य जैन मंदिरों की वजह से विश्वप्रसिद्ध है। इस क्षेत्र में अधिकांश जैन मंदिर श्वेताम्बर मत के है तथा सिरोही जिले में जैन तीर्थकर आदिनाथ (ऋषभदेव) से लेकर महावीर स्वामी तक के जैन तीर्थंकरों के तीर्थ व मंदिर आये हुए है। यहां अन्य धर्मों के मंदिरों के साथ–साथ जैन धर्म के बहुसंख्य मंदिर व जिनालय आये हुए है। सिरोही जिले में आये बहुत सारे मंदिरों की वजह से ही इसे देवनगरी कहां जाता है। जैन मंदिरों में जो मंदिर जैन धर्म की ऐतिहासिकता को लिए हुए अपनी प्राचीनता को दिखाते है, वह मंदिर तीर्थ की श्रेणी में माना जाता है। मंदिर के मूल गंभारे में मुख्य वेदी पर विराजित भगवान मंदिर के मूलनायक कहलाते है। सिरोही जिले के जैन मंदिरों की परम्परा में देलवाडा (आबू पर्वत), बामणवाड, जीरावला पार्श्वनाथ, मीरपुर, मुंगथला, नांदियां, पावापुरी, भैरू तारक आदि का अपना विशिष्ट स्थान है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भगवान महावीर स्वामी अपने जीवन काल में छद्म अवस्था के दौरान अर्बुदांचल, जीरावला, बामनवाड, भीनमाल, जाबालीपुर में विचरण किया था, ऐसा भीनमाल के अभिलेख से प्रमाणित होता है।[1] इस बात की पुष्टि मुंगथला के अभिलेख में उल्लेख होने का प्रमाण मिलता है।[2] इतिहासकार गोरीशंकर हीराचंद ओझा ने विक्रम संवत् की दूसरी शताब्दी के मिले शिलालेखों के आधार पर प्रमाणित किया है, कि राजा सम्प्रति मौर्य से पहले भी यहां जैन धर्म का प्रचार था। महाक्षत्रप रूद्रदामन के जुनागढ अभिलेख से ज्ञात होता है, कि मरू राज्य उसके राज्य के अन्तर्गत था। 8वीं शताब्दी उद्योतन सूरी विरचित कुवलयमाला में हूण राजा मिहिरकुल एवं तोरमाण जो जैन उपासक थे, इनके शासन काल में इस भू–भाग में जैन धर्म की उन्नति देखी गई।[3]

जीरावला पार्श्वनाथ मंदिर जनश्रुति के अनुरूप जैनाचार्य देवसूरीश्वर एवं कोडी ग्राम (भीनमाल के समीप) के सेठ अमरसा को स्वप्न दर्शन में जीरावला पर्वत के समीप एक गुफा में जमीन के नीचे पार्श्वनाथ की प्रतिमा का मिलना देखा और निश्चित स्थान पर खोजबीन करने पर जीरावला के मूलनायक पार्श्वनाथ की प्रतिमा मिली। पार्श्वनाथ जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर थे, जिन्होने जैन धर्म को सिद्धान्तिक आधार दिया तथा श्वेताम्बर मत में अत्यधिक मान्यता है।

चित्र सं. 1 : मूलनायक जीरावला पार्श्वनाथ की प्राचीन प्रतिमा

चित्र सं. 2: मूलनायक जीरावला पार्श्वनाथ की प्रतिमा की आंगी

विधि–विधान पूर्वक विक्रम संवत् 326 में सेठ अमरसा एवं देवसूरीश्वर के सानिध्य में मंदिर के निर्माण की शुरूआत हुई तथा विक्रम संवत् 331 में प्रतिमा की प्रतिष्ठा हुई। इस मंदिर का कई बार भव्य जीर्णोद्धार करवाया गया है तथा प्रतिमा की कई बार प्रतिष्ठा हुई है।

विभिन्न काल खण्डों में जैन आचार्यो व प्रतिष्ठित सेठों ने मंदिर का जीर्णोद्धार एवं धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किये है, जिसमें पहला प्रमुख जीर्णोद्धार विक्रम संवत् 663 में आचार्य मेरूसूरीश्वर गुप्तकाल में हुण नरेश तोरमाण के गुरू हरिगुप्त के शिष्य देवगुप्तसूरी के शिष्य शिवचन्द्रगणि ने मंदिर की यात्रा की तथा शिवचन्द्रगणि के शिष्य यक्षदत्तगणि ने यहां कई जैन मंदिरों का निर्माण करवाया है। उद्योतनसूरी के विद्वान गुरू आचार्य हरिभद्रसूरी ने भी मंदिर की पुनः प्रतिष्ठा करवाई थी। प्रतिहार राजा नागभट्ट ने जीरावला के पास नागाणी नामक स्थान पर नागजी का मंदिर बनवाया, जो आज भी टेकरी पर स्थित है, जो जीरावला के क्षेत्रपाल माने जाते है। इस मंदिर का दूसरी बार जीर्णोद्धार विक्रम संवत् 1033 में जैनाचार्य सहजानंद एवं तेतली नगर के सेठ हरदास ने करवाया। मध्यकाल में सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी की सेनाओं ने जब जालोर पर आक्रमण किया तब जीरावला मंदिर के पास वैष्णव मत का अम्बादेवी मंदिर था, जिसे नष्ट–भ्रष्ट किया तथा धन सम्पत्ति को लूटा एवं जीरावला मंदिर को भी नष्ट करने की कोशिश की लेकिन नष्ट न कर पाये। इसका प्रमाण कान्हडदेव प्रबंध में भी मिलता है।

तीसरी बार आचार्य अजितदेवसूरी एवं सेठ धांधल के समय विक्रम संवत् 1191 में कुछ मंदिर ओर बने तथा हाल ही में सन् 2017 में मंदिर का पूर्णतः जीर्णोद्धार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ है, जो मंदिर एवं तीर्थ की महिमा का जीता जागता उदाहरण है। मंदिर के पीछे की टेकरी पर एक प्राचीन किले के अवशेष दिखाई देते है, जो शायद मंदिर के प्राचीन परकोटे जैसा दिखता है। विक्रम संवत् 1851 के शिलालेख के अनुसार इस मंदिर में मूल नायक के रूप में पार्श्वनाथ विराजमान थे पर किसी कारणवश भगवान नेमिनाथ को मूल नायक के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। किसी भी शिलालेख से यह घटना की जानकारी नहीं मिलती है। पूर्व के प्राचीन मंदिर के बांयी ओर की एक कोठरी में पार्श्वनाथ की दो मूर्तियां है दूसरी कोठरी में भगवान नेमिनाथ की मूर्ति है। इस मंदिर के मूल नायक बदलने के पीछे विभिन्न आक्रमणों से चमत्कारिक पार्श्वनाथ की मूर्ति को बचाना मुख्य उद्देश्य रहा होगा।[4]

चित्र सं. 3: पार्श्वनाथ की अन्य प्राचीन प्रतिमा

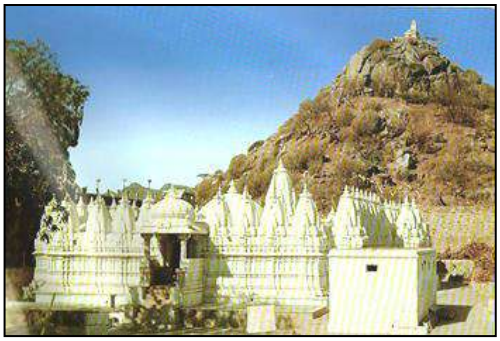

चित्र सं. 4 : जीरावला पार्श्वनाथ का प्राचीन मंदिर

जैन शास्त्रों में इस मंदिर एवं तीर्थ के कई नाम उल्लेखित है यथा : जीरापल्ली, जीरिकापल्ली, जीरावल्ली एवं जयराजपल्ली दिये है। प्रो. सोहनलाल पटनी अपने साक्ष्यों के अनुसार इस पर्वत का नाम जयराज बताते है, जिसकी तलहटी पर जीरावला मंदिर अवस्थित है, जो आज जयराजपल्ली का अपभ्रंश जीरावला नाम से दृष्टिगोचर है। श्री जिनभद्रसूरी के शिष्य सिद्धान्तसूरी ने श्री जयराजसूरीश श्री पार्श्वनाथ स्तवन की रचना भी की है। इस मंदिर का पवित्र मंत्राक्षर ''ऊँ श्री जीरावला पार्श्वनाथाय नमः'' है। यह मंदिर 52 जिनालय श्रेणी का मंदिर है, जो अपने चमत्कार, भव्यता, वैभव, धार्मिकता के साथ–साथ सांस्कृतिक विरासत को रखता है। इस मंदिर में 108 विभिन्न जैन देव प्रतिमा है, जो विभिन्न देहरियों (कक्षों) में रखे गये है। जीरावला पार्श्वनाथ श्वेताम्बर जैन मत में अत्यधिक चमत्कारिक एवं महिमा वाले है। कई जैन आचार्यो ने विभिन्न कालों में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश भाषाओं में मंदिर के मूल नायक पार्श्वनाथ की महिमा लिखी है। मंदिर जैन धर्म में तीर्थ की श्रेणी में आते है। जैन श्वेताम्बर में गुरू शिष्य परम्परा के 84 गच्छों में जीरापल्लीगच्छ का नाम एवं महिमा है। जीरावला मंदिर के दर्शन मात्र से क्रोध का नाश होता है। मूल नायक को भक्त भावना पूर्वक जीरावला प्रभु या जीरावल दादा कहते है। जैन धर्म के अलावा स्थानीय लोग भी मंदिर के प्रति आस्था रखते है।[5] जीरापल्ली पर्वत पर जीरावल भैरू का वश होने के कारण नाकोडा तीर्थ के समान इस तीर्थ की महिमा देखी जाती है। मंदिर में प्रतिष्ठित देवी पद्मावती की बैठी व खडी मूर्ति दोनों ही चमत्कारिक मानी जाती है। मंदिर में भक्तजनों की मनौतियां (मनोकामना) पूर्ण होती है।[6] मंदिर का मुख्य भाग मुख्य गर्भगृह है, जहां पर मूलनायक भगवान जीरावला पार्श्वनाथ की प्रतिमा स्थापित है तथा प्रतिमा अत्यधिक सुंदर है। पार्श्वनाथ प्रतिमा पर सर्पफण है तथा विभिन्न पर्वो पर सुंदर एवं मनमोहक आंगी की जाती है।

चित्र सं. 5 : जीरावला पार्श्वनाथ में प्राचीन प्रतिमाएं

मुख्य गर्भगृह में पद्मावती देवी की खडी प्रतिमा है, जो अपने चमत्कार के लिए प्रसिद्ध है, मुख्य प्रतिमा के दोनों तरफ पार्श्वनाथ भगवान की मूर्तियां है तथा मुनिसुव्रत स्वामी की काले पत्थर की मूर्ति है। दुसरी देवकुलिका दादा पार्श्वनाथ, पंचासरा पार्श्वनाथ तथा कल्याण पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। तीसरी देवकुलिका में अजिरापार्श्वनाथ एवं शान्तिनाथ प्रतिष्ठित है। चौथी देवकुलिका में माणिक्य पार्श्वनाथ, नवखण्डा पार्श्वनाथ व सूर्यमण्डल पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। पांचवी देवकुलिका में चिन्तामणी पार्श्वनाथ, वरकाणा पार्श्वनाथ व लोद्रवा पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। छठी देवकुलिका में जगवल्लभ पार्श्वनाथ, भाभा पार्श्वनाथ एवं मोरैया पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है।

सातवीं देवकुलिका में फलोदी पार्श्वनाथ एवं शान्तिनाथ प्रतिष्ठित है। आठवीं देवकुलिका में करहेडा पार्श्वनाथ, नाकोडा पार्श्वनाथ एवं कापरडा पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। नवीं देवकुलिका में मनमोहन पार्श्वनाथ, गोडी पार्श्वनाथ एवं पोसीना पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। दसवीं देवकुलिका में नेमिनाथ, पार्श्वनाथ एवं मल्लीनाथ की दो प्रतिमाएं प्रतिष्ठित है। ग्यारहवीं देवकुलिका में पार्श्वनाथ, कलिकुण्ड पार्श्वनाथ एवं कल्याण पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। बारहवीं देवकुलिका में शीतलनाथ पार्श्वनाथ, मुनिसुव्रत स्वामी व शान्तिनाथ प्रतिष्ठित है। तेरहवीं देवकुलिका में पद्मप्रभु, भीडभंजन पार्श्वनाथ व नेमिनाथ प्रतिष्ठित है। तेरहवीं व चौदहवीं देवकुलिका के मध्य गोखले में मुनिसुव्रत स्वामी की प्रतिमा है। चौदहवीं देवकुलिका में श्याम वर्ण में आदिश्वर पार्श्वनाथ तथा नाग रहित पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। पंद्रहवीं देवकुलिका में अवन्तिपार्श्वनाथ, अन्तरिक्षपार्श्वनाथ एवं पोसीना पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। सोलहवीं देवकुलिका में श्याम वर्ण की दो तथा श्वेत वर्ण की एक पार्श्वनाथ की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित है। सत्रहवीं देवकुलिका में नवलखा पार्श्वनाथ, मक्षी पार्श्वनाथ एवं नवपल्लवीया पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। अट्ठारहवीं देवकुलिका में शान्तिनाथ, पार्श्वनाथ एवं चन्द्रप्रभु प्रतिष्ठित है। 19वीं देवकुलिका में यवलेश्वर पार्श्वनाथ, श्री वरेज पार्श्वनाथ एवं गर्गाणी पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है।

21वीं देवकुलिका में सम्भवनाथ, पार्श्वनाथ एवं चन्द्रप्रभु प्रतिष्ठित है। 22वीं देवकुलिका में पार्श्वनाथ, सम्मेतशिखर पार्श्वनाथ एवं पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। 23वीं देवकुलिका में नगीना पार्श्वनाथ, पार्श्वनाथ एवं शाचा पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। 24वीं देवकुलिका में दो पार्श्वनाथ तथा एक धर्मनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। 25वीं देवकुलिका में भटेवा पार्श्वनाथ, सांवला पार्श्वनाथ एवं मनवांञ्छितपूरण पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। 26वीं देवकुलिका में महावीर स्वामी, पार्श्वनाथ एवं शान्तिनाथ प्रतिष्ठित है। 27वीं देवकुलिका में आदिश्वर, पार्श्वनाथ एवं धर्मनाथ प्रतिष्ठित है। 28वीं देवकुलिका में जेरींग पार्श्वनाथ, बलेचा पार्श्वनाथ एवं धींगडमल्ला पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। 29वीं देवकुलिका में सुपार्श्वनाथ, पार्श्वनाथ एवं मुनिसुव्रत स्वामी प्रतिष्ठित है। 30वीं देवकुलिका में महावीर स्वामी, दुधिया पार्श्वनाथ एवं ककडेश्वर पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। 31वीं देवकुलिका में वासुपूज्य स्वामी, पार्श्वनाथ एवं शान्तिनाथ प्रतिष्ठित है। 32वीं देवकुलिका में रायण्या पार्श्वनाथ, दुःखभंजन पार्श्वनाथ एवं नाकला पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। 33 वीं देवकुलिका में पार्श्वनाथ, गाडरिया पार्श्वनाथ एवं आदिश्वर प्रतिष्ठित है।

34वीं देवकुलिका में डोकरिया पार्श्वनाथ, गाडरिया पार्श्वनाथ एवं आदिश्वर प्रतिष्ठित है। 35वीं देवकुलिका में सुमतिनाथ, नाकोडा पार्श्वनाथ एवं पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। 36वीं देवकुलिका में शान्तिनाथ एवं महावीर स्वामी की दो प्रतिमा प्रतिष्ठित है। 38वीं देवकुलिका में पार्श्वनाथ के दोनों ओर शान्तिनाथ की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित है। 39वीं देवकुलिका में सम्भवनाथ के दोनों ओर पार्श्वनाथ की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित है तथा बाहर गोखले में श्रेयांसनाथ की मूर्ति है।

इसके बाद एक कमरा है, जिसमें पांच विभिन्न प्रतिमाएं है तथा दीवार पर महान चमत्कारिक स्वास्तिक यंत्र उत्कीर्ण है तथा चौबीस जीन माताओं का पट भी है, जो अत्यधिक प्राचीन है। 40वीं देवकुलिका में कलियुग पार्श्वनाथ, श्रीशंखलपुर पार्श्वनाथ एवं नीलकंठ पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। 41वीं देवकुलिका में गेला पार्श्वनाथ, सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ एवं दोलतीया पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। 42 वीं देवकुलिका में आदिश्वर, सुरसरा पार्श्वनाथ एवं शीतलनाथ प्रतिष्ठित है। 43वीं देवकुलिका में श्रेयांसनाथ, पार्श्वनाथ एवं महावीर स्वामी प्रतिष्ठित है। 45वीं देवकुलिका में

गोडी पार्श्वनाथ, शान्तिनाथ एवं मुज्जपरा पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। 46वीं देवकुलिका में श्वेतवर्ण नागरहित जीरावला पार्श्वनाथ के दोनों ओर पार्श्वनाथ की दो छोटी मूर्तियां प्रतिष्ठित है। 47वीं देवकुलिका में जोरवाडी पार्श्वनाथ, कम्बोई पार्श्वनाथ एवं चिन्तामणि पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। 48वीं देवकुलिका में श्री मण्डेरा पार्श्वनाथ, अजितनाथ एवं पद्मप्रभु प्रतिष्ठित है। 49वीं देवकुलिका में नेमनाथ श्रीघृतकल्लोल पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। 50वीं देवकुलिका में कापली पार्श्वनाथ, पार्श्वनाथ एवं ईश्वरा पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। 51वीं देवकुलिका में अमीझरा पार्श्वनाथ, पार्श्वनाथ एवं प्रसमीया पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। 52वीं एवं अन्तिम देवकुलिका में सेरीया पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित है। मंदिर के दाहिनें पट को तीर्थराज गिरनार तथा बायें पट को आबूराज नाम दिया गया है। भगवान नेमिनाथ की मूर्ति लगभग 200 वर्षो तक तीर्थ के मूलनायक रहे। यह मूर्ति जीरावल एवं वरमाण के बीच ऊंडावाला के पास के नांदला नाम के बडे पत्थर के पास वाले खेत से मिली थी।[7] मंदिर में विभिन्न गर्भगृह है, इन गर्भगृहो को देहरी एवं देवकुलिका कहते है।

चित्र सं. 6 : जीरावला पार्श्वनाथ का नवीनतम मंदिर

नवीन प्रतिष्ठा समारोह में कुछ नवीन प्रतिमाओं की भी स्थापना की गई है। मंदिर में पवित्र जपमाला के 108 मणकों की भांति 108 पवित्र पार्श्वनाथ प्रतिमाएं है, जो विभिन्न प्रसिद्ध मंदिरों के नाम से प्रतिष्ठित है। जिससे उन सभी मंदिरों के एक साथ इस मंदिर में दर्शन लाभ प्राप्त हो जाता है। लगभग सभी देवकुलिकाओं में स्तंभलेख उत्कीर्ण है, जो विभिन्न कालक्रमों, विभिन्न आचार्यों एवं विभिन्न सेठ–साहूकारों के नाम पर दर्ज है। नये मंदिर का कार्य लगभग दस–पन्द्रह वर्षो तक चला। वर्तमान मंदिर पूर्व की भांति सफेद संगमरमर से बनाया गया है, जिसकी अंजनशलाका प्राण–प्रतिष्ठा महोत्सव 1 से 10 फरवरी, 2017 को विधि–विधान पूर्वक किया गया।

इस मंदिर के सभी कार्यो का संचालन एवं प्रतिष्ठा समारोह भी श्री जीरावला पार्श्वनाथ जैन तीर्थ ट्रस्ट, जीरावला के जिम्मे है। वर्तमान में मंदिर भव्य एवं गगनचुम्बी है, जो पूर्णतः संगमरमर से निर्मित है। दीवारों, गुम्बद, शिखर, खम्बों आदि पर अत्यधिक सुंदर कलात्मक कलाकृतियां उकेरी गई है। नये निर्माणों में जैसलमेर के पीले पत्थरों से अत्याधुनिक बहुमंजिला धर्मशाला एवं भोजनशाला का भव्य निर्माण हुआ है। भोजनशाला में तीनों समय का भोजन सात्विक रूप में दिया जाता है तथा शाम का भोजन सूर्यास्त से पूर्व दिया जाता है। यह सभी निर्माण के लिए धन समाजसेवियों एवं भक्तजनों के सहयोग से बनाया गया है। एक उपासरा भी है, ये उपासरा शिक्षा के केन्द्र होते है, जहां पर जैन धर्म सम्बंधित शिक्षा दी जाती है। एक पोशाला तथा संत विश्रामशाला भी है। वर्षभर श्रद्धालुओं की उपस्थिति बनी रहती है तथा विभिन्न महोत्सवों का आयोजन होता रहता है।[8] मंदिर में प्रवेश हेतु विशेष अनुशासन का पालन किया जाता है। वात्क्षेप पद्धति करने के बाद ही गर्भगृह में प्रवेश दिया जाता है तथा प्रवेश के लिए पहले स्नान करके और पूजा के वस्त्रों को पहनकर ही प्रवेश कर सकते है। अन्य श्रद्धालु मंदिर में आम वस्त्रों के साथ गर्भगृह के बाहर से दर्शन लाभ ले सकते है, परन्तु किसी मूर्ति को छू नहीं सकते है।[9]

अर्बूदांचल सनातन धर्म के साथ–साथ जैन मत के लिए आदिकाल से धार्मिक कृत्यों का केन्द्र रहा है। इस क्षेत्र में जैन मत का प्रचार–प्रसार स्वयं महावीर स्वामी ने किया। इस क्षेत्र के कई शासकों ने जैन धर्म को आश्रय प्रदान किया। सेठ–साहूकारों ने जैन आचार्यो की प्रेरणा से प्रमुख तीर्थ स्थलों का भी विकास किया, पहले केवल मूर्तियों की पूजा तत्पश्चात् मंदिर में मूर्ति रख पूजा होने लगी। मंदिर से बडे मंदिर तथा आगे तीर्थो का रूप लेने लगे इस तरह तीर्थो का विकास हुआ। इन जैन मंदिरों ने इतिहास में कई मुस्लिम आक्रमण झेले है, परन्तु आज भी यह अपनी संस्कृति समेटे हुये है। इन मंदिरों के वास्तु–शिल्प की विशेषता उसमें धार्मिक भावना और प्रेम की अभिव्यक्ति रही। इस मंदिर के आस–पास कई जैन मंदिर एवं तीर्थ भी अत्यधिक प्रसिद्ध है जिसमें विश्व प्रसिद्ध देलवाडा, बामनवाड, मीरपुर और पावापुरी आदि। इन जैन मंदिरों की अपनी–अपनी अलग–अलग विशेषताऐं है। ये मंदिर स्थल लगभग सातवीं से तेहरवीं सदी के मध्य विकसित हुये और स्थापत्य की नागर शैली में निर्मित हुए है। इनमें अधिकांश मंदिर संगमरमर से बने हुए है। ये जैन मंदिर स्थापत्य कला में बेजोड अपनी कलात्मक शिल्प–सौंदर्य के लिए विश्वविख्यात है।

चित्र सं. 7 : जीरावला पार्श्वनाथ तीर्थ की नवीनतम धर्मशाला

सिरोही जिले के छोटे–छोटे गॉव में भी प्रसिद्ध देवालय एवं जिनालय आये हुए है। ये सभी जिनालय अपने आप में एक अद्भूत एवं ऐतिहासिक धरोहर के रूप में विद्यमान है। इन प्राचीन धरोहरों को सुरक्षित रखना एवं उनका संरक्षण करना हमारा पुनित कर्तव्य है। कई–कई जैन मंदिरों का जीर्णोद्धार आवश्यक है, वहां पर आवश्यक रूप से किया जाना चाहिए ताकि इनकी प्राचीनता को सुरक्षित रखा जा सके। प्रत्येक मानव की पहचान उसकी संस्कृति से और संस्कृति की पहचान उसके इतिहास, साहित्य, कला, धर्म, शिलालेख, ताम्रपत्र आदि से होती है। यदि हमें अपनी पहचान सुरक्षित रखनी है, तो हमें हमारे इतिहास का संरक्षण करना होगा।

संदर्भ

1. रत्नसंचय सूरीश्वर, भिन्नमाल की भव्यता, श्री रंजनविजयजी जैन पुस्तकालय, मालवाडा, वि. सं. 2072, पृष्ठ सं. 291
2. मुनिराज श्री जयंतविजय, अर्बुदांचल प्रदिक्षणा जैन लेख

संदोह, आबू भाग 5, श्री यशोविजय जैन ग्रंथमाला, भावनगर, पृष्ठ सं. 89
3. गौरी शंकर हीराचन्द ओझा, सिरोही राज्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, तृतीय संशोधित संस्करण, 2010
4. सोहनलाल पटनी, जीरावल दर्शन, श्री जीरावल पार्श्वनाथ जैन तीर्थ, जीरावल, 1982, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ सं. 31
5. मोहनलाल बोल्या, सिरोही व पाली जिले के जैन मंदिर, बडगांव, उदयपुर, प्रथम संस्करण, 2016, पृष्ठ सं. 326
6. तीर्थ दर्शन, प्रथम खण्ड, श्री महावीर जैन कल्याण संघ, मद्रास, 1980, पृष्ठ सं. 310–13
7. सोहनलाल पटनी, जीरावल दर्शन, श्री जीरावल पार्श्वनाथ जैन तीर्थ, जीरावल, द्वितीय संस्करण, 1982, पृष्ठ सं. 3–13
8. साक्षात्कार : साहिल भंसाली पुत्र श्री मुकेश पारसमल भंसाली, निवासी भीनमाल, हाल मुंबई
9. साक्षात्कार : भावेश हीरालाल पारसमलजी भंसाली, समाजसेवी एवं व्यवसायी निवासी भीनमाल, हाल मुंबई